ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI

Subject- Hindi Second Language

Topic- वन के मार्ग में (कविता)

Done by: Anu Bala

©ISW

वन के मार्ग में (कविता)

पाठ -5- वन के मार्ग में (कविता)

कवि परिचय: गोस्वामी तुलसीदास
(1532 ई. से 1623 ई.)

तुलसीदास जी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इन्हें कवि , संत और सुधारक कहा जाता है। ये नरहरिदास जी के शिष्य थे । इनकी राम भक्त रूप में पहचान है। इनकी संस्कृत और अवधि में कई रचनाएँ हैं ।इनको प्रसिद्धि रामचरितमानस से प्राप्त हुई है।

प्रमुख रचनाएँ :-, रामचरितमानस , विनय पत्रिका , कवितावली, दोहावली , साहित्य रतन तथा हनुमान चालीसा हैं ।

कवि- गोस्वामी तुलसीदास

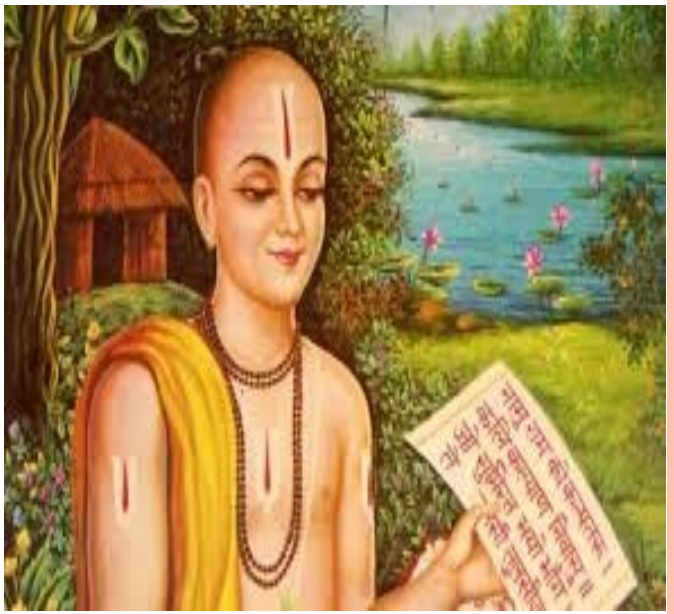

पाठ -5- वन के मार्ग में (कविता)

सवैया

1-पुर तें निकसी रघुबीर-बधू ,धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की,पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं,"चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?"
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारू चलीं जल च्वै।।

2-जल को गए लक्खनु,हैं लरिका परिखौ पिय!छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े।।
तुलसी रघुवीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाह को नेह लख्यौ,पुलको तनु , बारि बिलोचन बाढ़े।।

सवैया

1- पुर तें निकसी रघुबीर-बधू , धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की , पुट सूखि गए मधुराधर वै।।

व्याख्या:- प्रस्तुत सवैये में तुलसीदास जी ने सीता जी के वन गमन अर्थात वन की ओर जाने के समय का बहुत मार्मिक वर्णन किया है। नगर से निकलते ही थोड़ी दूर चलने के बाद ही राम की पत्नी सीता थक जाती हैं। उनके माथे पर पसीना आने लगता है तथा उनके कोमल होंठ सूख जाते हैं।

पुर तें - नगर से, from the city निकसी - निकली- came out ,रघुबीर-बधू-रामकी पत्नी Rama,s wife ,धरि- रखकर- to keep,धीर-धीरज - patience , दए - दिए keep मग में - मार्ग मेंon the way , डग-कदम steps , द्वै- दो two, झलकीं- दिखाई दी to see,भाल - माथा forehead , ,जल-पानी water, पुट- होंठ lips , सूखि-सूख dry ,मधुराधर-मधुर होंठ-beautiful lips.

सवैया

फिरि बूझति हैं , “चलनो अब केतिक ,पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै?”
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारू चलीं जल च्वै।

व्याख्या :- वे राम से पूछती हैं कि अभी और कितनी दूर चलना है तथा पर्णकुटी कहाँ बनानी है। उनकी इस व्याकुलता या बेचैनी को देखकर श्री राम की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

बूझति-पूछती-asked,चलनो-चलना-walk, पर्नकुटी -पत्तोंकी कुटिया hut made Out of leaves ,करिहौं- कहाँ बनाओगे where will you construct , कित -कहाँ where तिय-पत्नी wife , लखि-देखकर saw ,आतुरता-बेचैनी restless,पिय- प्रियतम husband ,अँखियाँ -आँखें eyes , चारू-सुंदर beautiful,जल च्वै- आँखों से आँसू बहना tears falling from the eyes

2 जल को गए लक्खनु ,हैं लरिका परिखौ पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि - डाढ़े ।।

व्याख्या :-प्रस्तुत सवैये में तुलसीदास जी ने सीता और राम के वन गमन अर्थात वन की ओर जाने के समय का वर्णन किया है।सीता जी बेचैन होकर राम से कहती है कि जल लाने गए लक्ष्मण तो बालक ही हैं उन्हें समय लग जाएगा ।उनके आने तक आप किसी वृक्ष की छाया में थोड़ी देर खड़े होकर उनकी प्रतीक्षा कर लें।मैं आपके पसीने को पोंछकर हवा कर देती हूँ ।मैं गरम रेत से तपे हुए आपके पैरों को भी धो देती हूँ ।

शब्दार्थ- लक्खनु -लक्ष्मण Lakshman ,लरिका- बालक ,लड़का boy , परिखौ- इंतजार करो to wait ,छाँह- छाया, shadow घरीक- एक घड़ी, कुछ समय some time , ह्वै ठाढ़े- खड़े होकर to stand ,पोंछि- पोंछ कर wipe away , पसेउ- पसीना sweat , बयारि- हवा air , पायँ – पैर feet , पखारिहौं -धोऊँगी wash भूभुरी - डाढ़े - रेत बहुत गर्म है sand is too hot .

तुलसी रघुवीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि विलंब लौं कंटक काढ़े ।
जानकीं नाह को नेह लख्यौ , पुलको तनु , बारि बिलोचन बाढ़े ।।

व्याख्या:-श्री राम सीता के बेचैनी से भरे वचनों को सुनकर कुछ देर पेड़ की छाया में बैठकर उनके पैरों से काँटे निकालने लगते हैं।सीता उन्हें प्रेम से देखती हैं और मन ही मन प्रियतम के इस स्नेह को देखकर पुलकित हो जाती हैं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं।

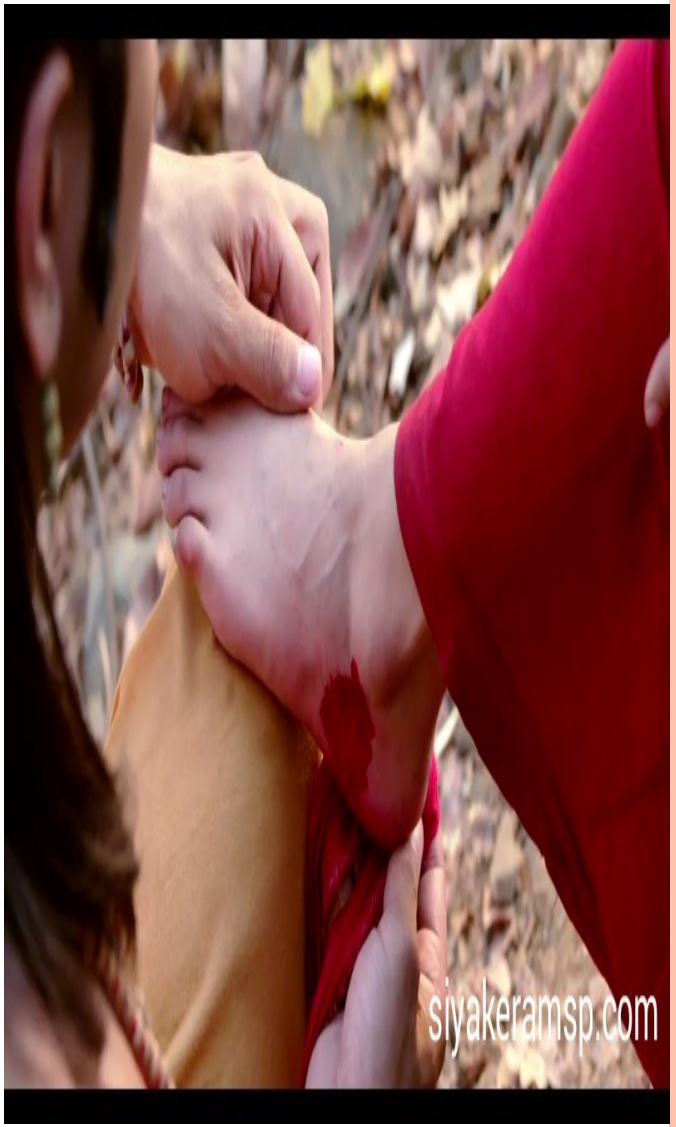

शब्दार्थ- प्रियाश्रम - पत्नी की मेहनत , hard work of the wife जानि कै - जानकर come to know विलंब लौं - देर तक for a long time, कंटक- काँटे thorns, जानकीं-सीता , नाह- नाथ, प्रियतम husband , नेह - स्नेह ,प्यार love, लख्यौ - देखकर saw , पुलको - पुलकित हो जाना to become joyful बहुत प्रसन्न हो जाना , तनु-शरीर body, बारि- जल water, बिलोचन- आँखें eyes ,बाढ़े - भर आना filled with.

वन के मार्ग में' नामक सवैयों का सार ।

' 'वन के मार्ग में' नामक सवैयों की रचना तुलसीदास जी द्वारा की गई है। इनमें राम ,सीता और लक्ष्मण के वन जाने का वर्णन है। नगर से निकलते ही राम की पत्नी सीता थोड़ी दूर चलने के बाद थक गईं। उनके माथे पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं और प्यास के कारण होंठ सूख गए।सीता बहुत थक कर श्रीराम से पूछती है कि अब कितनी दूर और चलना है तथा पर्णकुटी कहाँ बनानी है। अपनी पत्नी सीता को व्याकुल देख श्री राम का हृदय दुख से भर जाता है और उनकी आँखों में आँसू भर जाते हैं। सीता व्याकुल हृदय से श्री राम से कहती है कि लक्ष्मण जल लेने गए हैं। उनके आने तक आप किसी वृक्ष की छाया में थोड़ी देर विश्राम कर लें जिससे हमारी थकान दूर हो जाए और लक्ष्मण भी वापस आ जाएँगे । श्री राम सीता की व्याकुलता को देखकर बहुत दुखी हो गए ।वे बहुत देर तक पेड़ की छाया में बैठे रहे और सीता के पैरों से काँटे निकालते रहे । सीता अपने पति का व्यवहार देखकर बहुत प्रसन्न हो जाती हैं

summary

Tulsi Das is the creator of van ke marg main named savayon. It narrates the story of when Ram sita and Lakshman went to the forest. Just as they were out of the city, ram's wife sita got tired. You could see the beads of perspiration on her forehead and her lips dried due to thirst. When she was extremely fatigued, she asked ram as to how long did they have to travel and where would they set camp. Seeing sita perturbed, ram feels dejected and his eyes well up. Perturbed sita says that lakshman has gone to fetch water and till he arrives they can rest some time under the shadow of a tree to recover from tiredness. Ram was downhearted seeing sita so discomforted. They sat for a long time under the shade of a tree and ram took out the thorns from sita's feet. Sita feels elated looking at ram's efforts to comfort her.